पाठ्यपुस्तक : 'स्पर्श' भाग 2 (गद्य खंड)

बड़े भाई साहब (प्रेमचंद)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ एक साथ कई उद्देश्यों को पूरा करता है; जैसे-पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद भी आवश्यक है। जीवन में अनुभव किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा की रटंत प्रणाली अच्छी नहीं होती। परीक्षा पास कर लेना ही योग्यता का आधार नहीं है। छोटों के समक्ष आदर्श उपस्थित करने के लिए बड़ों को अपनी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है। प्यार और अपनत्व की भावना से यदि किसी को समझाया जाए तो वह अवश्य समझ जाता है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **छोटा भाई (कथानायक)**– • खेल-कूद तथा पतंगबाज़ी का शौकीन है। • पढ़ने-लिखने में कम रुचि रखता है। • प्रतिभाशाली है, कम पढ़ने पर भी अच्छे अंक ले आता है। • बड़े भाई से बहुत डरता है। • बड़े भाई का सम्मान भी करता है।
2. **बड़े भाई साहब**— • बहुत अध्ययनशील हैं। • प्रतिभाशाली नहीं हैं; क्योंकि पढ़ने पर भी पास नहीं होते। • छोटे भाई पर पूरी नज़र रखते हैं। • उपदेश देने में कुशल हैं। • लोक-व्यवहार का बहुत ज्ञान है। • छोटे भाई के हितैषी हैं, उसके हित के लिए अपनी इच्छाओं का दमन कर लेते हैं।

पाठ का सारांश

बड़े भाई साहब का परिचय–बड़े भाई साहब छोटे भाई से पाँच वर्ष बड़े थे। उनकी उम्र 14 वर्ष और छोटे भाई की 9 वर्ष थी। वे छोटे भाई से तीन दरजे आगे थे। पढ़ाई में वे कमज़ोर थे, इसलिए एक कक्षा में दो या तीन साल तक फ़ेल होते रहते थे। वे सारा दिन अध्ययन में लगे रहते थे। जब उनका दिमाग थक जाता था तो उसे आराम देने के लिए किताब या कॉपी पर कुत्ते, बिल्लियों और चिड़ियों के चित्र बनाते तथा ऐसे बेमेल शब्द लिखते, जिनका कोई अर्थ नहीं होता था। वे पढ़ाई में भले ही कमज़ोर थे, लेकिन बड़े भाई का दायित्व बखूबी निभाते थे। छोटे भाई को खूब डाँटते-फटकारते थे और उसकी प्रत्येक हरकत पर नज़र रखते थे।

लेखक की गतिविधियाँ एवं बड़े भाई की नसीहतें–लेखक का मन पढ़ाई में बहुत कम लगता था। इसलिए वह मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता था और खूब खेलता था। कभी दोस्तों से गप्पें, कभी झूलने का मज़ा, परंतु कमरे में पहुँचते ही बड़े भाई पूछते थे–कहाँ थे? उनका रुद्र-रूप देखकर लेखक काँप जाता था। वह मौन धारण कर लेता था। इस पर बड़े भाई साहब स्नेह और रोष-भरा उपदेश दिया करते थे–'अंग्रेज़ी पढ़ना हँसी-खेल नहीं है। मैं रात-दिन आँखें फोड़ता हूँ, तब जाकर यह विद्या आती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख पाते। मुझे देखो, मैं कोई खेल-तमाशा नहीं देखता। फिर भी एक क्लास में दो-तीन साल लगते हैं। तुम यों ही खेलते रहे तो उम्र बीत जाएगी। इससे तो अच्छा है कि घर चले जाओ। दादा की मेहनत की कमाई यों बरबाद न करो।'

बड़े भाई साहब की नसीहतों का लेखक पर प्रभाव–बड़े भाई साहब की कड़ी बातें सुनकर लेखक खूब रोता-पछताता। भाई ऐसी-ऐसी चुभती बातें कहते कि लेखक का कलेजा काँप जाता। वह निराश हो जाता, परंतु कुछ देर बाद फिर-से हिम्मत लौट आती। वह पढ़ाई में जी लगाने का इरादा करता। वह नए सिरे से टाइम-टेबिल बनाता। रोज़ की दिनचर्या बनाता। उसमें खेलने का समय बिलकुल भी न रखता, परंतु पहले ही दिन से उस टाइम-टेबिल की अनदेखी शुरू हो जाती। मैदान की खुली हवा, फुटबाल और वॉलीबाल देखते ही वह फिर-से मैदान की तरफ़ दौड़ पड़ता। परिणामस्वरूप उसे फिर से भाई साहब की नसीहतें और झिड़कियाँ सुननी पड़तीं। उसके लिए भाई का सामना होना नंगी तलवार जैसा प्रतीत होता था। परंतु वह क्या करे, उससे खेलों का तिरस्कार न हो पाता था।

परीक्षा-परिणाम का लेखक पर प्रभाव–वार्षिक परीक्षा हुई। भाई साहब फिर-से फ़ेल हो गए। लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। लेखक के मन में आया कि बड़े भाई साहब को खूब सुनाए। उनसे पूछे कि तुमने पढ़-लिखकर क्या कमा लिया, परंतु मुँह से शब्द न निकला। हाँ, अब वह बड़े अधिकार से खेलने जाने लगा। बड़े भाई साहब ने भी लेखक की निडरता भाँप ली। आखिर एक दिन उनके संयम का बाँध टूट पड़ा।

बड़े भाई साहब का लेखक को उपदेश–लेखक सुबह से दोपहर तक गुल्ली-डंडा खेलकर भोजन के लिए आया। बड़े भाई साहब ने उसे आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा–देख रहा हूँ, इस साल कक्षा में प्रथम आ गए हो तो तुम्हें घमंड हो गया है। परंतु घमंड रावण का भी नहीं रहा। जानते हो, रावण चक्रवर्ती राजा था। आज के अंग्रेज़ भी चक्रवर्ती नहीं हैं। रावण को सभी राजा कर देते थे। मगर फिर भी उसका घमंड टूटा। शैतान हो या शाहेरूम-सबका अहंकार नष्ट हुआ था। तुमने एक दरजा क्या पास कर लिया है, तुम्हें घमंड हो गया है। यह पास होना नहीं है, बल्कि अंधे के हाथ बटेर लग गई है। परंतु यह बटेर बार-बार हाथ नहीं लगेगी।

बड़े भाई साहब द्वारा अपने दरजे की मुश्किलें बताना–भाई साहब बोले–मेरे फ़ेल होने पर न जाओ। मेरी कक्षा में पहुँचोगे तो दाँतों पसीना आ जाएगा। इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा, जिसमें आठ-आठ हेनरी हुए हैं, दरजनों जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स। इन सबके किस्से याद रखते-रखते चक्कर आने लगते हैं। जामेट्री बनाने वाले तो व्यर्थ में छात्रों का खून पीते हैं। बताओ अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया तो क्या हुआ? परंतु नहीं, इसी रटंत का नाम है शिक्षा। अब रेखा पर लंब गिराने का छात्रों से क्या वास्ता? परंतु परीक्षा पास करने के लिए यह सब खुराफ़ात करनी ही पड़ती है।

अब बताइए 'समय की पाबंदी' पर चार पन्नों का निबंध लिखने को कहा जाता है। पूछो, यह हिमाकत है कि नहीं। जो बात एक ही वाक्य में कही जा सकती है, उस पर इतने पन्ने क्यों खराब करें? यह छात्रों पर सरासर अत्याचार है। अभी तो यह निबंध संक्षेप में है। वरना शायद सौ-दो-सौ पन्नों में लिखवाते। इन अध्यापकों को ज़रा भी तमीज़ नहीं है और लाला–मेरे दरजे में आओगे तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे। मैं लाख फ़ेल हो गया हूँ। परंतु अनुभव में तुमसे बड़ा हूँ।

भाई साहब के ये तिरस्कार-वचन सुनकर लेखक को भोजन बहुत बेस्वाद लगा। वह ऊँचे दरजे की पढ़ाई का भयंकर चित्र सुनकर भयभीत हो उठा। फिर भी उसकी रुचि पुस्तकों की ओर न बन सकी। अब वह चोरी-चोरी खेलने जाने लगा।

बड़े भाई साहब का दूसरी बार फ़ेल हो जाना–अगले साल बड़े भाई साहब फिर फ़ेल हो गए, जबकि लेखक दरजे में प्रथम आया। बड़े भाई साहब ने इस बार दिन-रात मेहनत की थी। एक-एक शब्द चाट गए थे। फिर भी फ़ेल

हो गए। परिणाम सुनकर वह रो पड़े। लेखक भी रो पड़ा। उसे भाई साहब पर दया आने लगी। अब दोनों में बस एक ही कक्षा का अंतर रह गया। लेखक के मन में विचार आया कि कहीं बड़े भाई साहब अगले साल भी फ़ेल हो गए तो दोनों एक ही दरजे में हो जाएँगे। फिर यह कहाँ से मेरी फ़ज़ीहत करेंगे। फ़ेल होने के बाद बड़े भाई नरम पड़ गए। उन्हें समझ आ गया कि अब उनको लेखक को डाँटने का अधिकार नहीं रहा। लेखक की स्वच्छंदता बढ़ने लगी। अब उसे कनकौए उड़ाने का शौक लग गया। वह पूरा दिन पतंगबाज़ी के खेल में लगाने लगा। हाँ, वह यह बराबर ध्यान रखता था कि कहीं बड़े भाई साहब उसे देख न लें। वह उनका अदब और सम्मान पूरा बनाए रखता था।

बड़े भाई साहब द्वारा छोटे भाई को आत्मगौरव याद दिलाना–एक संध्या को लेखक होस्टल से दूर कनकौआ लूटने दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं। बालकों की सेना झाड़ूदार बाँस और लग्गी उठाए हुए बेतहाशा दौड़ी जा रही थी। सहसा बड़े भाई साहब ने लेखक को देख लिया। उन्होंने लेखक का हाथ पकड़ लिया। बोले–इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले का कनकौआ लूटते तुम्हें शर्म नहीं आती? आठवीं में पढ़ते हो। कुछ अपनी पोज़ीशन का भी ख्याल करो। एक ज़माना था, जब आठवीं पास लोग नायब तहसीलदार, डिप्टी मजिस्ट्रेट या सुपरिंटेंडेंट हो जाते थे। आजकल कितने ही मिडिलची अखबारों के संपादक हैं और तुम! इनके साथ कनकौए लूटने भागे जा रहे हो। माना कि तुम ज़हीन हो और कल को यह भी हो सकता है कि तुम मेरी जमात में आ जाओ या मुझसे आगे निकल जाओ। फिर भी यह न समझना कि मुझे तुम्हें कुछ कहने का हक नहीं है।

बड़े भाई साहब द्वारा अनुभव का महत्त्व समझाना–बड़े भाई साहब बोले–मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ। तुम मेरे तजुरबे की बराबरी नहीं कर सकते। तुम चाहे एम०ए०, डी०फिल्० और डी०लिट्० क्यों न हो जाओ। पर समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती। हमारे दादा और अम्माँ कोई अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं। फिर भी हम पढ़ों-लिखों को समझाने का हक उनका है। भगवान न करे, मैं बीमार हो जाऊँ। तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएँगे। तुम दादा को तार करने के सिवा कुछ न करोगे, परंतु तुम्हारी जगह दादा हों तो बिलकुल न घबराएँ। वे खुद मरज़ पहचानकर इलाज करेंगे और उसमें सफल न होने पर डॉक्टर को बुलाएँगे। हम-तुम तो महीनेभर के खर्च का हिसाब-किताब भी नहीं जानते, परंतु दादा ने हमारे खर्च से भी आधे में अपनी उम्र का बड़ा भाग नेकनामी से बिता दिया है। अपने हेडमास्टर साहब को ही लो। वह पढ़े-लिखे हैं। एक हज़ार रुपये से भी अधिक कमाते हैं, किंतु उनके घर की व्यवस्था उनकी माँ ही चलाती हैं। इसलिए भाईजान! गरूर को दिल से निकाल डालो। मैं तुम्हें बेराह न चलने दूँगा। यदि न माने तो थप्पड़ भी रसीद कर दूँगा।

छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होना–लेखक को बड़े भाई साहब की यह नई युक्ति बहुत अच्छी लगी। वह उनके सामने झुक गया। उसे सचमुच लघुता का अनुभव हुआ। बोला–आपको कहने का पूरा अधिकार है। यह सुनते ही बड़े भाई साहब ने लेखक को गले से लगा लिया। बोला–मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है। पर क्या करूँ? खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? तभी एक कटा हुआ कनकौआ ऊपर से गुज़रा। बड़े भाई साहब ने लपककर उसे पकड़ लिया। वह बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े। लेखक भी पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

शब्दार्थ

दर्जा = कक्षा। **तालीम** = शिक्षा। **बुनियाद** = नींव। **पुख्ता** = पक्का। **पायेदार** = ऐसी वस्तु जिसके पैर हो, मज़बूत। **तम्बीह** = डाँट-डपट। **जन्मसिद्ध** = जन्म से ही प्राप्त। **शालीनता** = विनम्रता। **हाशियों** = किनारों। **सामंजस्य** = तालमेल। **मसलन** = उदाहरणतः। **इबारत** = लेख। **जमात** = कक्षा। **कंकरियाँ** = पत्थर के छोटे टुकड़े। **रौद्र रूप** = भयानक या गुस्से वाला रूप। **प्राण सूख जाना** = बुरी तरह डर जाना। **हर्फ़** = अक्षर। **ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा** = बेकार आदमी। **खून जलाना** = कड़ी मेहनत करना। **घोंघा** = आलसी जीव। **सबक** = सीख। **कसूर** = गलती। **गाढ़ी कमाई** = मेहनत की कमाई। **सूक्ति-बाण** = व्यंग्यात्मक कथन, चुभती बातें। **ज़िगर** = हृदय, दिल। **बूते** = वश। **मंज़ूर** = स्वीकार। **टाइम टेबिल** = समय सारणी। **स्कीम** = योजना। **अमल करना** = पालन करना। **अवहेलना** = तिरस्कार। **जानलेवा** = जान के लिए खतरा। **नसीहत** = सलाह। **फ़जीहत** = अपमान। **दबे पाँव** = बिना आवाज़ के। **घुड़कियाँ** = गुस्से से भरी बातें सुनना। **सालाना** = वार्षिक। **अव्वल** = प्रथम। **लज्जास्पद** = शर्मनाक। **रौब** = डर। **शरीक** = शामिल। **हेकड़ी** = घमंड। **ज़ाहिर** = स्पष्ट। **आंतक** = भय। **भाँप लिया** = जान लिया। **सहज बुद्धि** = सामान्य बुद्धि। **हस्ती** = अस्तित्व। **महज़** = सिर्फ़। **आधिपत्य** = अधिकार। **महीप** = राजा। **कुकर्म** = बुरा काम। **सर फिर गया** = लापरवाह होना। **अंधे के हाथ बटेर लगना** = बिना प्रयास बड़ी चीज़ पा लेना। **दाँतों पसीना आ जाना** = बहुत मेहनत करना। **लोहे के चने चबाना** = कठोर परिश्रम करना। **कांड** = घटना। **सफ़ाचट** = बिलकुल साफ़। **सिफ़र** = शून्य। **पनाह** = शरण। **मुमतहिन** = परीक्षक। **बे-सिर-पैर** = बिना अर्थ का। **प्रयोजन** = उद्देश्य। **खुराफ़ात** = व्यर्थ की बातें। **हिमाकत** = बेवकूफ़ी। **किफ़ायत** = बचत से। **अनर्थ** = अर्थहीन। **पापड़ बेलना** = कठिन काम। **आटे-दाल का भाव** = सारी बातें पता चलना। **ताज्जुब** = आश्चर्य। **जलील** = बेशर्म। **लुप्त** = गायब। **प्राणांतक** = प्राण लेने वाला। **विधि** = किस्मत। **फ़जीहत** = अपमान। **सहिष्णुता** = सहनशीलता। **कनकौए** = पतंग। **अदब** = इज़्ज़त। **बेतहाशा** = जिसे किसी की खबर न हो। **मुठभेड़** = आमना-सामना। **उग्र** = तीव्र। **लिहाज़** = शर्म। **पोज़िशन** = पदवी। **मिडिलचियों** = दसवीं पास। **ज़हीन** = प्रतिभावान्। **समकक्ष** = एक ही कक्षा में। **तजुरबा** = अनुभव। **हाथ-पाँव फूल जाना** = परेशान हो जाना। **बदहवास** = बेहाल। **मुहताज** = दूसरों पर आश्रित। **गरूर** = घमंड। **बेराह** = रास्ते से भटकना। **युक्ति** = योजना। **सजल** = नमी वाली। **बेतहाशा** = बिना सोचे समझे।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ। वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी–स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक–इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ। लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

1. बड़े भाई साहब के हुक्म को कानून समझने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–

(i) उम्र में बड़ा होना

(ii) बड़ी कक्षा में होना

(iii) ताकतवर होना

(iv) समझदार होना

(क) (i) और (ii) (ख) (i) और (iii)

(ग) (ii), (iii) और (iv) (घ) केवल (iv).

2. लेखक की शालीनता किस बात में थी–

(क) खेलने-कूदने में

(ख) मेहनत से पढ़ाई करने में

(ग) बड़े भाई के आदेश को कानून मानने में

(घ) बड़े भाई का आदेश न मानने में।

3. निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–

कथन (A)–बड़े भाई साहब स्वभाव से बहुत अध्ययनशील थे।

कारण (R)–हरदम किताब खोले बैठे रहते थे।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे–

(क) सो जाते थे

(ख) संगीत सुनते थे

(ग) किताब पर कुत्ते-बिल्लियों के चित्र बनाने जैसी निरर्थक हरकतें करते थे

(घ) नदी के किनारे पर जाकर बैठ जाते थे।

5. कौन-सा कार्य लेखक के लिए 'छोटा मुँह बड़ी बात थी'–

(क) बड़े भाई साहब की रचनाओं को समझना

(ख) बड़े भाई साहब से कुछ पूछना

(ग) बड़े भाई साहब को निरर्थक कार्यों से रोकना

(घ) बड़े भाई साहब से तर्क-वितर्क करना।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क)।

(2) मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबाल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेज़ी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

1. टाइम-टेबिल बनाने के पहले ही दिन से क्या शुरू हो जाता था–

(क) टाइम-टेबिल पर अमल का काम

(ख) टाइम-टेबिल की अवहेलना का काम

(ग) मौज-मस्ती करने का काम

(घ) मित्रों के साथ खेलने-कूदने का काम।

2. लेखक द्वारा टाइम-टेबिल पर अमल न करने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–

(i) खेल में अत्यधिक रुचि होना

(ii) टाइम-टेबिल का जटिल होना

(iii) पढ़ाई में मन न लगना

(iv) उद्दंड स्वभाव

(क) केवल (i) (ख) (i) और (ii)

(ग) (ii) और (iii) (घ) (ii) और (iv).

3. निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–

कथन (A)–उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले।

कारण (R)–हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. लेखक बड़े भाई के डर से क्या कार्य करता था–

(क) उनके साये से दूर भागता था

(ख) उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता था

(ग) कमरे में दबे पाँव आता था

(घ) उपर्युक्त सभी।

5. 'सिर पर नंगी तलवार लटकना' मुहावरे का अर्थ है–

(क) मृत्यु होना

(ख) युद्ध होना

(ग) खतरे का अत्यधिक समीप होना

(घ) तलवार से प्रहार करना।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(3) अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।

1. बड़े भाई साहब का स्वभाव कैसा हो गया था–

(क) बहुत उग्र (ख) बहुत चंचल

(ग) कुछ नरम (घ) धीर-गंभीर।

2. लेखक बड़े भाई साहब की किस बात का अनुचित लाभ उठाने लगा–

(क) उनके अत्यधिक स्नेह का

(ख) उनकी सहिष्णुता का

(ग) उनके उपेक्षापूर्ण व्यवहार का

(घ) उनके क्रोधी स्वभाव का।

3. **लेखक की स्वच्छंदता बढ़ने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
(i) उत्तीर्ण हो जाना
(ii) बड़े भाई का अनुत्तीर्ण हो जाना
(iii) घमंड का भाव
(iv) ताकतवर हो जाना
(क) (i) और (iv) (ख) (i) और (ii)
(ग) (ii) और (iii) (घ) (i), (ii) और (iii).

4. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
कथन (A)–मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था।
कारण (R)–अब मेरा सारा समय पतंगबाज़ी की भेंट होता था।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

5. **लेखक बड़े भाई साहब की नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था, क्योंकि–**
(क) वह बड़े भाई साहब से डरता था
(ख) उनका बहुत अदब करता था
(ग) उनकी कोई परवाह नहीं करता था
(घ) उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहता था।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(4) महज़ इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेज़ों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अंग्रेज़ों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नामोनिशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया दोनों से गया।
(CBSE 2023)

1. **'जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो।' पंक्ति का आशय है–**
(क) पुस्तकीय ज्ञान का अक्षरशः अर्थ समझना
(ख) पुस्तकीय ज्ञान से बुद्धि का विकास करना
(ग) पुस्तकीय ज्ञान से परीक्षा पास करना
(घ) पुस्तकीय ज्ञान से अच्छे अंक लाना।

2. **रावण के चक्रवर्ती होने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
(i) सब राजा उसे कर देते थे।
(ii) बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे।
(iii) वह बहुत धनवान था।
(iv) वह भूमंडल का स्वामी था।
(क) (i) और (ii) (ख) (i), (ii) और (iv)
(ग) (ii) और (iii) (घ) (i) और (iv).

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
कथन (A)–आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे।
कारण (R)–अभिमान किया तो दीन-दुनिया दोनों से गया।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **बड़े भाई ने लेखक को रावण का उदाहरण क्यों दिया–**
(क) रावण के अंत से परिचित कराने के लिए
(ख) रावण की शक्ति से परिचित कराने के लिए
(ग) लेखक की मनमानी पर अंकुश लगाने के लिए
(घ) लेखक के व्यवहार में आए घमंड को रोकने के लिए।

5. **'चुल्लू भर पानी देने वाला' मुहावरे का अर्थ है–**
(क) प्यासे को पानी पिलाने वाला
(ख) थोड़ी-सी सहायता करने वाला
(ग) दुःख के समय साथ देने वाला
(घ) कंजूसी से जीवन बिताने वाला।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'बड़े भाई साहब' पाठ के लेखक हैं–**
(क) सीताराम सेकसरिया (ख) प्रेमचंद
(ग) हबीब तनवीर (घ) लीलाधर मंडलोई।

2. **लेखक के भाई साहब उनसे कितने साल बड़े थे–**
(क) तीन साल (ख) चार साल
(ग) पाँच साल (घ) दो साल।

3. **बड़े भाई साहब लेखक से कितने दरजे आगे थे–**
(क) तीन दरजे (ख) चार दरजे
(ग) दो दरजे (घ) एक दरजे।

4. **बड़े भाई साहब किस मामले में जल्दबाज़ी से काम लेना पसंद नहीं करते थे–**
(क) भोजन करने में (ख) खेलने-कूदने में
(ग) शिक्षा के मामले में (घ) कोई निर्णय करने में।

5. **बड़े भाई साहब का शिक्षा के मामले में काम करने का क्या तरीका था–**
(क) वे कल का काम आज ही कर लेते थे
(ख) वे आज का काम कल पर टालते रहते थे
(ग) एक साल का काम एक महीने में कर डालते थे
(घ) एक साल का काम दो-तीन साल में करते थे।

6. **लेखक का मन किसमें नहीं लगता था–**
(क) खेलने-कूदने में
(ख) खाने-पीने में
(ग) पढ़ने में
(घ) भजन करने में।

7. **लेखक मौका पाते ही क्या करता था–**
(क) स्कूल से घर भाग जाता था
(ख) होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता था
(ग) पेड़ से फल तोड़कर खा लेता था
(घ) उपर्युक्त में से कुछ नहीं।

8. **लेखक के प्राण कब सूख जाते थे–**
(क) जब वह कक्षा में जाता था
(ख) जब वह कमरे में आकर भाई साहब का रुद्र-रूप देखता था
(ग) जब अध्यापक उससे पाठ सुनते थे
(घ) जब उसे कोई खेलने के लिए कहता था।

9. **'प्राण सूख जाना' का अर्थ है–**
(क) बहुत भयभीत हो जाना (ख) सो जाना
(ग) प्यास लगना (घ) भूख लगना।

10. **छोटे भाई (लेखक) का मौन कह देता था कि–**
(क) उसे अपना अपराध स्वीकार नहीं
(ख) वह बड़े भाई साहब से नाराज़ है
(ग) उसे अपना अपराध स्वीकार है
(घ) उपर्युक्त में से कुछ नहीं।

11. **किसके अनुसार, अंग्रेज़ी सीखना आसान नहीं है–**
(क) बड़े भाई साहब के (ख) छोटे भाई के
(ग) अध्यापक के (घ) इनमें से कोई नहीं।

12. **बड़े भाई के अनुसार, किसे अंग्रेज़ी का एक अक्षर नहीं आएगा–**
(क) बड़े भाई साहब को (ख) छोटे भाई (लेखक) को
(ग) लेखक के मित्र को (घ) इनमें से कोई नहीं।

13. **अपनी मेहनत के बारे में बड़े भाई साहब ने क्या बताया–**
(क) वे कभी मेले-तमाशे देखने नहीं जाते
(ख) कभी हॉकी या क्रिकेट का मैच नहीं देखते
(ग) हमेशा पढ़ते रहते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

14. **पाठ में दिए गए 'घोंघा' शब्द का क्या अर्थ है–**
(क) बुद्धिमान (ख) मूर्ख
(ग) एक समुद्री जीव (घ) परिश्रमी।

15. **बड़े भाई साहब को किस कारण लगता है कि छोटा भाई दादा की गाढ़ी कमाई बरबाद कर रहा है–**
(क) बड़े भाई को सम्मान न देने के कारण
(ख) खाने-पीने में अधिक खर्च करने के कारण
(ग) खेल-कूद में समय बरबाद करने के कारण
(घ) अध्यापकों का आदर न करने के कारण।

16. **लेखक किसकी लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता–**
(क) बड़े भाई साहब की (ख) दादा की
(ग) अध्यापक की (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. **लेखक द्वारा आँसू बहाने का क्या कारण था–**
(क) बड़े भाई का उपदेश देना (ख) बड़े भाई की डाँट सुनना
(ग) अध्यापक द्वारा दंडित करना (घ) कक्षा में अनुत्तीर्ण होना।

18. **भाई साहब की डाँट सुनने के बाद निराश हुआ छोटा भाई क्या सोचने लगता था–**
(क) पढ़ाई मन लगाकर करूँगा (ख) घर वापस चला जाऊँ
(ग) पुनः खेल खेलने चला जाऊँ (घ) पढ़ाई करना छोड़ दूँ।

19. **भाई साहब हर समय छोटे भाई को क्या उपदेश देते थे–**
(क) पढ़ाई करने का (ख) समय व्यर्थ न करने का
(ग) खेल-कूद न करने का (घ) ये सभी।

20. **निम्नलिखित में कौन-से वाक्य 'बड़े भाई साहब' से मेल खाते हैं–**
(i) बड़े होने का दायित्व निभाना चाहिए।
(ii) अनुभव ही सबसे बड़ा ज्ञान है।
(iii) छोटों को सीख देने के लिए बड़ों को आदर्शवादी बनना पड़ता है।
(iv) बड़ों के नियंत्रण में नहीं रहना चाहिए।
(क) (i) और (ii) (ख) (i) और (iv)
(ग) (ii) और (iii) (घ) (i), (ii) और (iii).

उत्तर–1. (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (ख) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (घ) **14.** (ख) **15.** (ग) **16.** (क) **17.** (ख) **18.** (ख) **19.** (घ) **20.** (घ)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : **छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?**

उत्तर : छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय सोचा कि अब मैं खूब मन लगाकर पढ़ूँगा, खेल-कूद से अधिक समय पढ़ाई पर दूँगा तथा बड़े भाई साहब को शिकायत का कोई मौका नहीं दूँगा। वह टाइम-टेबिल का पालन इसलिए नहीं कर पाया; क्योंकि उसकी खेल में बहुत रुचि थी। जब वह बाहर खेलते बच्चों को देखता तो स्वयं को रोक नहीं पाता था और पढ़ाई छोड़कर खेलने चला जाता था।

प्रश्न 2 : **एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?** ***(CBSE 2019)***

उत्तर : छोटे भाई को देखकर बड़े भाई साहब ने उसे खूब डाँटा-फटकारा और कहा कि तुम्हें पास होने का घमंड हो गया है, लेकिन घमंडी का सर्वनाश हो जाता है। तुम अपनी मेहनत से पास नहीं हुए हो, बल्कि अंधे के हाथ बटेर लग गई है।

प्रश्न 3 : **बड़े भाई साहब को अपनी इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?** ***(CBSE 2019)***

उत्तर : बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को सही राह पर चलाना चाहते थे। उनका विचार था कि छोटे बड़ों का अनुसरण करते हैं। यदि वे खेल-कूद में समय गँवाएँगे तो छोटा भाई भी ऐसा ही करेगा, इसलिए वे अपनी खेलने-कूदने की इच्छाएँ दबाकर रखते थे।

प्रश्न 4 : **बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?** ***(CBSE 2016)***

उत्तर : बड़े भाई साहब छोटे भाई को खेल-कूद छोड़कर दिन-रात पढ़ाई करने की सलाह देते थे; क्योंकि उनके विचार से पढ़ाई बहुत कठिन काम है। इसमें आँखें फोड़नी पड़ती हैं, खून जलाना पड़ता है, मन की इच्छाओं को दबाना पड़ता है तथा बहुत मेहनत करनी पड़ती है। वे छोटे भाई को यह सलाह भी देते थे कि यदि पढ़ना-लिखना तुम्हारे वश की बात नहीं तो घर लौट जाओ, माता-पिता का पैसा बरबाद मत करो।

प्रश्न 5 : **बड़े भाई की डाँट-फटकार यदि न मिलती तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।**

उत्तर : हमारे विचार से यह बात सत्य है कि बड़े भाई की डाँट-फटकार से ही छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता था। छोटा भाई प्रतिभाशाली था, इस बात को बड़े भाई साहब भी मानते थे। लेकिन उसका ध्यान खेल-कूद में अधिक था। बड़े भाई की डाँट-फटकार से थोड़ी देर पढ़ लेता था और प्रतिभाशाली होने के कारण उतने ही समय में बहुत कुछ याद कर लेता था। यही कारण है कि वह परीक्षा में न

केवल पास होता था, बल्कि कक्षा में अव्वल भी आता था। यदि बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार का डर उसे न होता तो वह कभी न पढ़ पाता।

प्रश्न 6 : कहानी 'बड़े भाई साहब' के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है? ***(CBSE SQP 2021)***

उत्तर : बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ पुस्तकें पढ़ने या परीक्षा पास करने से नहीं, बल्कि दुनियादारी से आती है। अनुभव ही सबसे बड़ा ज्ञान है। जिसे जीवन जीने का अनुभव अधिक होता है, वही समझदार होता है। माता-पिता, दादा-दादी अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे होने पर भी पढ़ी-लिखी नई पीढ़ी से अधिक समझ रखते हैं। वे घर-खर्च, बीमारी और अन्य प्रबंध करने में अधिक कुशल होते हैं। बड़े भाई साहब ने इसके लिए हेडमास्टर साहब की बूढ़ी माँ का उदाहरण दिया, जिसने अपने अनुभव से सुशिक्षित पुत्र के घर की सारी व्यवस्था को सँभाल रखा था।

प्रश्न 7 : छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया?

उत्तर : छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का यह फ़ायदा उठाया कि उसने पढ़ना-लिखना बिलकुल बंद कर दिया और सारा दिन खेल-कूद में बिताने लगा। उसके मन से बड़े भाई साहब का भय बिलकुल समाप्त हो गया।

प्रश्न 8 : मैदान का आकर्षण छोटे भाई को कहाँ ले जाता था और क्या-क्या करवाता था? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : मैदान की हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके उसे मैदान में ले जाते और वह फ़ुटबाल की उछल-कूद, कबड्डी के दाँव-घात तथा वॉलीबाल की तेज़ी और फुरती में सबकुछ भूल जाता।

प्रश्न 9 : लेखक ने बड़े भाई की योग्यता पर क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर : लेखक ने बड़े भाई की योग्यता पर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दबाज़ी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मज़बूत डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे।

प्रश्न 10 : दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर : दूसरी बार पास होने पर छोटा भाई स्वयं को स्वच्छंद समझने लगा तथा उसने पढ़ना-लिखना बिलकुल छोड़ दिया और सारा दिन खेल-कूद में बिताने लगा।

प्रश्न 11 : 'बड़े भाई साहब' पाठ में क्या विचार व्यक्त किए गए हैं? बड़ों और छोटों पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : 'बड़े भाई साहब' पाठ में बड़ों और छोटों के व्यवहार पर विचार किया गया है। इससे बड़ों के जीवन पर यह प्रभाव पड़ता है कि उन्हें छोटों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। छोटों को सही राह पर चलाने के लिए बड़ों को अपनी बहुत-सी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है। छोटों को इस पाठ से यह प्रेरणा मिलती है कि उन्हें अपनी शिक्षा का घमंड नहीं करना चाहिए। जीवन की समझ अनुभव से आती है, इसीलिए उन्हें बड़ों की बातों की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 12 : छोटे भाई की सफलता पर बड़े भाई ने क्या टिप्पणी की?

उत्तर : छोटे भाई की सफलता पर बड़े भाई ने यह व्यंग्य किया कि केवल किताबें रटकर उत्तीर्ण होना कोई महान कार्य नहीं है। असली ज्ञान तो व्यावहारिक ज्ञान होता है, जब मनुष्य शिक्षा के साथ-साथ अनुभव भी प्राप्त कर लेता है। कोरी रटंत प्रणाली मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकती। जीवन में अनुभव का बहुत महत्त्व है। अनुभवी चाहे अशिक्षित ही क्यों न हो, परंतु अपने अनुभव से जीवन की गाड़ी को सुचारु रूप से चला सकता है। इसके लिए उन्होंने दादा जी तथा हेडमास्टर की माता जी का उदाहरण दिया, जो अशिक्षित थे, मगर घर को चलाने में पूरी निपुणता दिखाते थे। इस प्रकार बड़े भाई साहब ने छोटे भाई की सफलता को नकारा।

प्रश्न 13 : बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर : बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर और कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द को बार-बार लिखते रहते थे। वे कई बार ऐसी शब्द रचना करते, जिसका कोई अर्थ ही नहीं होता था।

प्रश्न 14 : छोटे भाई के कक्षा में अव्वल आने पर भी बड़े भाई साहब द्वारा उसके तिरस्कार के क्या कारण थे? 'बड़े भाई साहब' पाठ के आधार पर लिखिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : छोटा भाई प्रतिभाशाली था, लेकिन वह पढ़ाई-लिखाई में कम ध्यान देता था। खेल-कूद में उसका अधिक ध्यान था। बड़े भाई की सीख से वह थोड़ी देर कुछ पढ़ लेता था। इसी से वह कक्षा में अव्वल आया था। उसे घमंड हो गया था कि वह बिना पढ़े भी उत्तीर्ण हो सकता है और अव्वल आ सकता है। यह सोचकर उसने पढ़ना-लिखना बिल्कुल छोड़ दिया था। बड़े भाई उसकी इस मानसिकता को भाँप गए थे; इसलिए उन्होंने उसे डाँटा और उसका तिरस्कार किया।

प्रश्न 15 : कहानी के अनुसार बड़े भाई साहब को क्या विशेषाधिकार मिला हुआ था?

उत्तर : बड़े भाई साहब छोटे भाई से पाँच साल बड़े थे। इस नाते उन्हें छोटे भाई को डाँटने-फटकारने का पूरा अधिकार मिला हुआ था। यदि वह डाँट-फटकार से न मानता तो बड़े भाई को उसे थप्पड़ मारने का भी अधिकार था। उनके अनुसार इस अधिकार को उनसे विधाता भी नहीं छीन सकते थे।

प्रश्न 16 : बड़े भाई ने छोटे भाई को पूरी उम्र एक ही कक्षा में पड़े रहने का भय क्यों दिखाया? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को सारी उम्र एक ही कक्षा में पड़े रहने का भय इसलिए दिखाया; क्योंकि उसका पढ़ने-लिखने में मन बिलकुल नहीं लगता था। बड़े भाई ने उसे बताया कि पढ़ाई बहुत कठिन है। जब मैं दिन-रात मेहनत करके भी पास नहीं होता तो तुम सारा दिन खेल-कूदकर कैसे पास हो सकते हो? तुम तो सारी उम्र एक ही कक्षा में पड़े रहोगे।

प्रश्न 17 : कहानी में लेखक द्वारा किस प्रकार की शालीनता प्रदर्शित की गई? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : कहानी में लेखक अर्थात् छोटे भाई ने बहुत शालीनता प्रदर्शित की है। बड़े भाई साहब उसे बात-बात पर डाँटते हैं, लेकिन वह कभी उन्हें कोई उलटा जवाब नहीं देता। वह उनका बहुत आदर करता है और उनसे छिपकर खेलने जाता है। बड़े भाई पढ़ाई में कमज़ोर हैं, लेकिन वह उनका कभी उपहास नहीं करता। वह बड़े भाई साहब को अपना हितैषी मानता है।

प्रश्न 18 : लेखक को मौन देखकर बड़े भाई का व्यवहार कैसा हो जाता था? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : लेखक को मौन देखकर बड़े भाई साहब समझ लेते थे कि यह अपना अपराध स्वीकार कर रहा है। वे स्नेह और रोषभरे शब्दों में उसे खूब डाँट-फटकार लगाते। उस समय उनका व्यवहार एक शासक की तरह हो जाता था।

प्रश्न 19 : परिवार के अनुभवी जनों द्वारा दी गई सीख भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। आपके द्वारा स्पर्श पाठ्यपुस्तक में पढ़े गए पाठ के माध्यम से भी यह ज्ञात होता है। कहानी के पात्रों के माध्यम से कथन को सिद्ध कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : हमारे द्वारा स्पर्श पाठ्यपुस्तक में पढ़ी गई कहानी 'बड़े भाई साहब' के माध्यम से ज्ञात होता है कि परिवार के अनुभवी जनों द्वारा दी गई सीख भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। कहानी में बड़े भाई साहब छोटे भाई को पढ़ने-लिखने की सीख देते हैं। इसके लिए उसे डाँटते-फटकारते भी हैं। बड़े भाई की सीख से छोटा भाई पढ़ने के लिए प्रेरित होता है। इसी कारण वह कक्षा में अव्वल आता है। कहानी के अंत में छोटे भाई को बड़ों की सीख के महत्त्व का पता भी चल जाता है। अतः बड़ों की सीख भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

प्रश्न 20 : 'जीवन की समझ व्यावहारिक अनुभव से आती है' बड़े भाई साहब के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर : बड़े भाई साहब के इस विचार से हम पूर्णतः सहमत हैं; क्योंकि जीवन की समझ पुस्तकीय ज्ञान से नहीं, बल्कि दुनियादारी से आती है। माता-पिता बच्चों से कम पढ़े-लिखे हों या अनपढ़ हों, लेकिन वे अपने सुशिक्षित बच्चों से अधिक समझदार होते हैं; क्योंकि उनके पास अनुभव का व्यावहारिक ज्ञान होता है। वे जीवन की हर परिस्थिति और समस्या का समाधान धैर्यपूर्वक कर लेते हैं। हेडमास्टर साहब की बूढ़ी माँ अनपढ़ थीं और मास्टर साहब ऑक्सफोर्ड से एम० ए० किए हुए थे। लेकिन वे एक हज़ार रुपये में घर नहीं चला सके, जबकि बूढ़ी माँ ने न केवल घर चलाया, बल्कि हज़ार रुपये में से बचत भी की। अतः जीवन की समझ व्यावहारिक ज्ञान से ही आती है।

प्रश्न 21 : बड़ा भाई छोटे भाई पर शासन करने के लिए कौन-कौन-से उपाय करता है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : बड़ा भाई छोटे भाई पर शासन करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाता है—

(i) वह हमेशा छोटे भाई के खेल-कूद और स्वच्छंदता पर नियंत्रण रखता है। उससे रोज़ सवाल पूछता है कि वह कहाँ गया था?

(ii) वह भाई द्वारा पढ़ने में मन न लगाने पर लंबे-लंबे भाषण देता है। उस भाषण में अपने फ़ेल होने का, पढ़ाई के कठिन होने का, स्वयं के खेल-कूद से दूर रहने का उदाहरण देता है।

(iii) स्वयं फ़ेल होने पर वह सफलता की बजाय बुद्धि के विकास को महत्त्वपूर्ण बताता है।

(iv) लेखक द्वारा मनमानी करने पर वह उसे घमंड न करने की सीख देता है। वह रावण, शैतान, शाहेरूम जैसे बड़े-बड़े अभिमानियों की फ़ज़ीहत के उदाहरण देता है।

(v) वह इतिहास, अलजबरा, जामेट्री और निबंध-लेखन को अत्यंत कठिन बताता है।

(vi) वह आचरण की महिमा और गौरव को महत्त्वपूर्ण बताकर छोटे भाई को अपमानित करता है।

(vii) वह किताबी शिक्षा की बजाय जीवन के अनुभव को अधिक काम की चीज़ बताता है।

प्रश्न 22 : 'अहंकार मनुष्य का विनाश करता है'–इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई ने क्या-क्या उदाहरण दिए? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : सबसे पहले बड़े भाई ने रावण का उदाहरण दिया। रावण भूमंडल का स्वामी था। वह चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी राजा उसके अधीन थे। 'आग' और 'पानी' के देवता भी उसके दास थे। वह अंग्रेज़ों से भी अधिक शक्तिशाली और महान था। लेकिन घमंड ने उसका नामो-निशान मिटा दिया। उसे कोई चुल्लू भर पानी देने वाला भी नहीं बचा। इसी प्रकार शैतान को घमंड हो गया था कि वह ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त है। इस घमंड के कारण उसे स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था, इसके कारण वह भीख माँग-माँगकर मर गया। बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा कि तुम्हें भी पास होने का घमंड हो गया है, जबकि तुम अपनी मेहनत से पास नहीं हुए हो, बल्कि अंधे के हाथ बटेर लग गई है। इसलिए तुम घमंड मत करो।

प्रश्न 23 : इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं? ***(CBSE 2016)***

अथवा **'बड़े भाई साहब' कहानी के आधार पर लगभग 100 शब्दों में लिखिए कि लेखक ने समूची शिक्षा-प्रणाली के किन पहलुओं पर व्यंग्य किया है? आपके विचारों से इसका क्या समाधान हो सकता है? तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए।** ***(CBSE 2018)***

अथवा **'बड़े भाई साहब' पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचारों से सहमत हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2020)***

उत्तर : **समूची शिक्षा-प्रणाली के विभिन्न पहलुओं पर व्यंग्य**—लेखक ने समूची शिक्षा के निम्नलिखित तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है—

(i) शिक्षा में समझाने और सिखाने की अपेक्षा रटंत विद्या पर बल दिया जाता है। जो छात्र विषय-सामग्री को रट लेता है, उसे मेधावी समझ लिया जाता है।

(ii) पाठ्यक्रम में अरुचिकर और अनावश्यक विषयवस्तु का भी समावेश किया जाता है।

(iii) छात्रों को वे विषय भी पढ़ने पड़ते हैं, जिनमें उसकी रुचि नहीं होती।

(iv) परीक्षक पाठ्यपुस्तक के आधार पर ही मूल्यांकन करता है। यदि कोई छात्र अपनी बुद्धि से प्रश्न का उत्तर देता है तो उसके अंक काट लिए जाते हैं।

हम लेखक के व्यंग्य से सहमत हैं। यद्यपि शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन आ गया है, लेकिन उपर्युक्त कमियाँ आज भी विद्यमान हैं।

समाधान—सैद्धांतिक शिक्षा के स्थान पर व्यावहारिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए; क्योंकि व्यावहारिक शिक्षा में करके सीखना होता है। विषयवस्तु और पाठ्यक्रम में छात्रों की रुचि का ध्यान अवश्य दिया जाना चाहिए। किसी भी विद्यार्थी को कोई ऐसा विषय न पढ़ना पड़े, जिसमें उसकी रुचि ही न हो। मूल्यांकन पद्धति में भी लचीलापन होना चाहिए। यदि विद्यार्थी का उत्तर सैद्धांतिक दृष्टि से ठीक है और उसमें कहीं कुछ भाषायी उलट-फेर हो गया है तो उसके अंक नहीं काटे जाने चाहिए।

प्रश्न 24 : छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

उत्तर : बड़े भाई साहब अकसर छोटे भाई को डाँटते-फटकारते रहते थे, लेकिन उनकी डाँट-फटकार का छोटे भाई पर कोई असर नहीं होता था। इसका कारण यह था कि उनकी डाँट में कड़वाहट और क्रोध की भावना होती थी, जिसका छोटे भाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था। एक दिन जब बड़े भाई साहब ने उसे प्यार और अपनत्व से समझाया तो उसके मन पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा। बड़े भाई साहब ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि तुम बुद्धिमान् हो, लेकिन यदि तुम्हें अपने गौरव का ध्यान नहीं तो बुद्धिमत्ता का क्या लाभ। उन्होंने छोटे भाई को जीवन में अनुभव का महत्त्व बताया और इसके लिए अपने माता-पिता और हेडमास्टर साहब की माँ का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि खेलने-कूदने को मेरा भी मन करता है, लेकिन तुम्हारा हित देखते हुए मैं अपनी इच्छाओं का दमन कर लेता हूँ। इन अपनत्व और प्यारभरी बातों को सुनकर छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

प्रश्न 25 : बड़े भाई साहब ने किन-किन विषयों का उदाहरण देकर छोटे भाई से शिक्षा को दुस्साध्य बताया?

उत्तर : बड़े भाई साहब ने बताया की अलजबरा और जामेट्री पढ़ना लोहे के चने चबाना है। 'अ ब ज' की जगह 'अ ज ब' लिख दिया तो सारे नंबर कट गए। इसलिए एक-एक अक्षर रटना पड़ता है। अंग्रेज़ों का इतिहास पढ़ना पड़ता है, जिसमें सैकड़ों बादशाह हुए, जिनमें कई के तो नाम भी एक जैसे हैं। नाम में गलती होते ही नंबर कट जाते हैं। हिंदी में एक छोटे-से विषय पर चार-चार पन्नों का निबंध लिखना पड़ता है। इसे लिखने के लिए दिमाग को निचोड़ना पड़ता है। इस प्रकार बड़े दरजे की शिक्षा बहुत कठिन है, इसे पढ़ने में तुम्हें दाँतों पसीना आ जाएगा।

प्रश्न 26 : छोटे भाई के स्वभाव पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर : छोटा भाई अर्थात् लेखक एक प्रतिभाशाली छात्र है। खेल-कूद में उसकी रुचि है। उसे सैर-सपाटा, गप्पबाज़ी और मटरगश्ती में बहुत आनंद मिलता है। उसे एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ लगता है। अपने बड़े भाई की तरह दिन-रात किताबों में घुसे रहने की बजाय तो लगता है कि वह पढ़ाई छोड़कर घर चला जाए। इसलिए वह लाख चाहकर भी टाइम-टेबिल के अनुसार पढ़ नहीं सकता। वह फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद का तिरस्कार नहीं कर पाता। लेखक प्रतिभाशाली होने पर भी घमंडी नहीं है। हालाँकि सफलता पाकर उसके मन में थोड़ी-बहुत स्वतंत्रता लेने की हिम्मत आ जाती है, किंतु वह बड़े भाई के सामने कुछ नहीं बोलता। वह हमेशा उनका सम्मान करता है। वह दिनभर खेलकर कमरे में दबे पाँव आता है। बड़े भाई के डाँटने पर वह केवल सिर झुकाकर सुनता है। उसमें छोटे-बड़े का लिहाज़ है।

प्रश्न 27 : 'बड़े भाई साहब' कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'बड़े भाई साहब' कहानी से हमें निम्नलिखित प्रेरणा मिलती है–

(i) बड़े होने से कुछ भी करने का अधिकार नहीं मिल जाता। बड़ों को छोटों के हितार्थ अपनी बहुत-सी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है।

(ii) जीवन की वास्तविक समझ अनुभव और दुनियादारी से आती है।

(iii) यदि छोटों को प्यार और अपनत्व से समझाया जाए तो वह अवश्य ही बड़ों की बात मान लेते हैं।

(iv) जो व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं, पहले उसे स्वयं करना चाहिए।

प्रश्न 28 : बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

अथवा **बड़े भाई साहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

उत्तर : बड़े भाई साहब की स्वभावगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) **बड़प्पन पर गर्व**– बड़े भाई साहब को अपने बड़प्पन का गर्व था, जिसका अहसास वे अपने छोटे भाई को कराते रहते थे।

(ii) **अध्ययनशील**—वे बहुत अध्ययनशील थे, दिन-रात पढ़ते रहते थे।

(iii) **कुशल उपदेशक**—उपदेश देने में बहुत कुशल थे। वे अपनी बातों को उदाहरण और तर्क देकर समझाते थे।

(iv) **भाई के हित के लिए स्वयं की इच्छाओं का दमन**—छोटे भाई के हितैषी थे। उसके हित के लिए अपनी इच्छाओं का दमन कर लेते थे।

(v) **लोक-व्यवहार के ज्ञाता**—बालक होते हुए भी बड़ों जैसा अनुभव और लोक-व्यवहार रखते थे।

(vi) **सामान्य-बुद्धि**—अधिक प्रतिभावान् नहीं थे, इसलिए एक कक्षा में दो-दो बार फ़ेल हो जाते थे।

प्रश्न 29 : प्रस्तुत पाठ में वर्तमान शिक्षा-प्रणाली पर कैसा व्यंग्य किया गया है?

उत्तर : बड़े भाई साहब पाठ में वर्तमान शिक्षा-प्रणाली को रटंत शिक्षा कहा गया है। यानी अक्षर-अक्षर रटकर विद्यार्थी पास तो हो जाते हैं, परंतु उनका व्यावहारिक ज्ञान शून्य रह जाता है। इस प्रकार की शिक्षा का कोई लाभ नहीं, क्योंकि इसमें बच्चा कक्षाएँ तो उत्तीर्ण कर लेता है, मगर कुछ समय बाद समस्त याद किया हुआ भूल जाता है। विद्यार्थियों को अनावश्यक ही दस-दस पेज के निबंध लिखवाए जाते हैं। कहने को तो संक्षिप्त वर्णन करने को कहा जाता है। किताबों पर पढ़ाई का बोझ अनावश्यक है। परीक्षाओं का खतरा भी विद्यार्थियों पर मँडराता ही रहता है। यह सब हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की कमियाँ हैं, जिन्हें दूर करके एक ऐसी व्यवस्था करनी होगी, जो छात्रों को बोझिल न लगे और शिक्षा में उनकी रुचि हो।

प्रश्न 30 : पढ़ाई और परीक्षा के प्रति बड़े साहब और छोटे भाई के दृष्टिकोण में क्या मौलिक अंतर है? आपके विचार से दोनों में सामंजस्य किस प्रकार बैठाया जा सकता है? ***(CBSE 2020)***

उत्तर : पढ़ाई और परीक्षा के विषय में बड़े भाई साहब और छोटे भाई के दृष्टिकोण में मूल रूप से बहुत अंतर है। बड़े भाई साहब की दृष्टि में पढ़ाई बहुत कठिन कार्य है। उनके विचार से खेल में रुचि रखने वाला और उसमें समय नष्ट करने वाला विद्यार्थी पढ़ाई नहीं कर सकता। इसीलिए वे छोटे भाई को खेलने से रोकते हैं। उनकी दृष्टि में परीक्षा उत्तीर्ण करना बहुत कठिन कार्य है। उसे प्रश्नों को रटकर ही उत्तीर्ण किया जा सकता है। सभी विषयों को याद कर लेना भी उनकी दृष्टि में एक असंभव कार्य है। छोटा भाई पढ़ाई को सहज मानता है। वह खेल को पढ़ाई से अधिक महत्त्व देता है। परीक्षा उत्तीर्ण करना उसके लिए एक खेल ही है वह एक बार ध्यान से पढ़कर सब याद कर लेता है और परीक्षा में प्रथम आता है। हमारे विचार से यदि बड़े भाई साहब पढ़ाई के साथ-साथ खेलों को भी महत्त्व दे तथा छोटा भाई खेलों के साथ-साथ पढ़ाई को महत्त्व दे तो दोनों में सामंजस्य बैठाया जा सकता है।